ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-६
दिनांक- मंगलवार,२१ जनवरी,२०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः १६.६ एवं १२.६ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ६० प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ७८ प्रतिशत, हवा की औसत गति ५.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.३ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन २.५ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १४.५ एवं दोपहर में २१.३ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा। रात्री एवं सुबह में घना कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(२२-२६ जनवरी,२०२०)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २२-२६ जनवरी,२०२० तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते है तथा इस अवधि में आमतौर पर मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। २२ जनवरी के सुबह में घना कुहासा छा सकता है।
- पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान १८ से २० डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान ७ से ६ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। सामान्य से थोड़ी अधिक ठंढ़ रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन ८ से १० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ८० से ८५ प्रतिशत तथा दोपहर में ६५ से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- पूर्वानुमानित अवधि में मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए कृषक भाईयों को सलाह दी जाती है कि हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की खुदाई प्राथमिकता से करें।
- बसन्तकालीन ईख की रोपाई के लिए मौसम अनुकूल हो रहा है। रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की तैयारी के वक्त जुताई में १५-२० टन सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करें। यह खाद भुमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में खर-पतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें। फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो २.५ किलोग्राम जिंक सल्फेट, १.२५ किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं १२.५ किलोग्राम युरिया को ५०० लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से १५ दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करें।
- आलू की अगात प्रभेद की तैयार फसलों की खुदाई कर लें। बीज वाली फसल की ऊपरी लत्ती की कटाई कर लें तथा खुदाई के १५ दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगरानी करें। आलू की फसल में शुरुआती अवस्था से कंद बनने की अवस्था तक यह कीट फसल को नुकसान पहुँचाती है। उपचार हेतु क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ से ३ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गरमा मौसम की सब्जियों जैसे-भिन्डी, कद्दू, कदिमा, करेला, खीरा एवं नेनुआँ की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। सब्जियों की स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए सड़ी-गली गोबर खाद का प्रबंध करें। १५०-२०० क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पुरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। यह खाद भुमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २ लीटर प्रति एकड़ की दर से २०-३० किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। इस कीट के पिल्लू रात्री के समय निकलकर इन सब्जियों की छोटे-छोटे उग रहे पौधो पर चढ़कर पत्तियों तथा कोमल शाखाओं को काटकर खाती है एवं जमीन पर गिरा देती हैं जिससे पूरा पौधा ही सूख जाता है।
- चारा की खड़ी फसल-जई, बरसीम एवं लूसर्न की कटाई २५-३० दिनों के अन्तर पर करें। प्रत्येक कटनी के बाद सिंचाई कर खेतों में १० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टर की दर से उपरिवेशन करें।
- विलम्ब से बोई गयी दलहनी फसल में २ प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अन्तराल पर दो बार करें। अरहर में फली छेदक कीट की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
- पशुपालक भाई दूधारु पशुओं को हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से ५० ग्राम नमक, ५० से १०० ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें।

आज का अधिकतम तापमानः १८.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ३.५ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः ७.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.२ डिग्री अधिक

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकार